~~अवि~~

Page 1

B A (I), Psychology (H)
General Psy.
Paper I, MJC I 17/10/2025

Topic — संवेग में हाइपोथैलेमस की क्रियाएँ (Role of Hypothalamus in Emotion)

शरीरशास्त्रियों (Physiologist) के द्वारा अनुसंधानों में पाया गया कि संवेगात्मक व्यवहारों के नियंत्रण का काम हाइपोथैलेमस करता है। वृहतमस्तिष्क और ~~मध्यमस्तिष्क~~ मध्यमस्तिष्क के बीच में थैलेमस रहता है जिसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। जो शरीर से सभी भागों से आनेवाली प्रवाहों को ग्रहण कर निश्चित स्थान में भेजने का कार्य करता है थैलेमस के ठीक नीचे की रचना को उपथैलेमस कहते हैं जो संवेगात्मक अभिव्यक्ति से संबंध ऐच्छिक मांसपेशियों की क्रियाओं को नियंत्रित करता है तथा हाइपोथैलेमस सहानुभूतिक एवं उपसहानुभूतिक स्नायुमंडलों की क्रियाओं को नियंत्रित करने का मुख्य केन्द्र है।

हाइपोथैलेमस का संवेग में कितना महत्वपूर्ण स्थान है इस बात से ही स्पष्ट हो जाता है कि जब मस्तिष्क के इस क्षेत्र में किसी प्रकार की बीमारी (जैसे– ट्यूमर का होना) हो जाती है तब रोगी का संवेगात्मक जीवन ~~पूर्णतया~~ पूर्णतया बदल जाती है वह संवेगविहीन या उदासीन बन जाता है। कुछ लोगों में नार्कोलेप्सी (Narcolepsy) की अवस्था का विकास

Page 2

होते भी देखा गया था जिनके मौलिक पर नियंत्रण कोई नियंत्रण नहीं रहता था। अतः क्रिया रोग से ग्रस्त हो जाता है।

मासरमैन, इग्राम, रैनिसन, रैन्सन आदि प्रयोगकर्ताओं द्वारा प्रयोग किये जाने वाले के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि संवेग के हाइपोथैलेमस की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इन्होंने प्रयोगों में कुत्ते तथा बिल्लियों के हाइपोथैलेमस को काटकर निकाल देने के बाद देखा कि जब उनके पास संवेग उत्पन्न करने वाली कोई परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है तब वे किसी प्रकार का संवेगात्मक व्यवहार नहीं करते। हार्लो एवं स्टैगनर ने निष्कर्ष रूप में कहा कि विभिन्न संवेगों के प्रदर्शन का प्रतिरूप अलग-अलग व्यक्तियों एवं परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है।

कैनन तथा बार्ड ने भी यह स्वीकार किया कि संवेग में हाइपोथैलेमस का अधिक महत्व होता है। उन्होंने एक स्वतंत्र सिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसे Hypothalmic theory कहते हैं।

अतः संवेग में हाइपोथैलेमस का बहुत ही अधिक महत्व है।

Kumar Pati
Maharaja College, Ara